

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

सिद्धाश्रम संस्पर्शित्

चंद्र ग्रहण साधनाएं

भाद्रपद पौर्णिमा २०२५ - ७/८ सितम्बर २०२५

ग्रहण काल : ७ सितम्बर २०२५, ९:५७ रात्री से ८ सितम्बर २०२५, १:३० रात्री

१) धनागमन, व्यापार वृद्धि एवं लक्ष्मी कृपा हेतु :

तांत्रोक्त सहस्र लक्ष्मी प्रयोग :

विधान: साधक या साधिकाये स्नान आदि से निवृत्त होकर पीली वस्त्र धारण कर , पूर्व या उत्तर दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे , गुरु मंत्र एक या चार माला जप कर साधना आरंभ करें |

भ्रांगी, काली एवं करालि गुटिकाएं अपने सामने नीले कपडे पर चावलो के डेरीयों पर स्थापित करे और उनकी सिन्दूर आदि से पूजन करे | घी का दीपक प्रज्वलित कर सुगन्धित धूप जला ले | भोग मे फल आदि का प्रयोग कर सकते है |

अपनी जो इच्छा है उसे ७-७-७ बार दोहरा कर तीनो गुटिका ओं पर ७-७-७ बार अक्षत चढ़ायें और निम्न लिखित मंत्र का जप मुंगा या कमल बीज माला से ११-११-११ माला जप करे |

जप के उपरांत, गुटिकाओ को घर की तिजोरी , पूजा स्थान या व्यापार स्थान पर ४० दिनो तक लाल कपडे में बांध कर रखे,बाद में नदी, तालाब (सरोवर) या समुद्र मे बहा दे | अन्य सभी सामग्री, माला, चवलों कि डेरीयां उस नीले कपडे में बांधकर जंगल या नदी में प्रवाहित करे | अपनी इच्छा को गुप्त ही रखे |

मंत्र: || ॐ ह्रीं ॐ || ११ माला
|| ॐ श्रीं ॐ || ११ माला
|| ॐ क्लीं ॐ || ११ माला

सामाग्री: भ्रांगी, काली,करालि गुटिकाएं ,चावल, नीले वस्त्र, लाल वस्त्र, मुंगा / कमलबीज माला

जप संख्या: ११-११-११ माला

२) प्रचंड पीडा, रोग, बाधा के निवारण हेतु:

चंडोग्र प्रयोग:

विधान: साधक या साधिकाये स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल या काले वस्त्र धारण कर , दक्षिण दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे , गुरु मंत्र एक या चार माला जप कर साधना आरंभ करें | अपने सामने सफेद वस्त्र पर कांसे कि कटोरी रख उसमें काले तिल कि डेरी पर प्रभंजन गुटिका स्थापित करे | गुटिका की पुजा केवल भस्म से करे | सामने तेल का दीपक और धूप जला ले | मन मे अपनी इच्छा बोल

कर संकल्प करे, निम्न लिखित मंत्र का २१ माला रुद्राक्ष माला से जपे | गुटिका को अपने गले में धारण करे या पीडा / बाधा के परिहार उपरांत विसर्जित कर दे |

मंत्र: || ॐ हुं हुं चण्डोग्राय शिवाय हुं हुं फट् ||

सामाग्री: सफेद वस्त्र , प्रभंजन गुटिका, कांसे पत्र, काला तिल, रुद्राक्ष माला

जप संख्या: २१ माला

३) गुरु - सामिप्यता या गुरु के प्रिया बनने हेतु:

गुरु - आहुत – प्रयोग:

विधान: साधक या साधिकाये स्नान आदि से निवृत्त होकर पीली धोती या साडि धारण कर, पूर्व दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे , प्रयोग करने से पूर्व गुरु मंत्र की एक या चार माला जप करे और अपने गुरु से मानसिक आज्ञा और अनुमती ले कर साधना आरंभ करे | अपने बाँयें हाथ में " भ्रांगी गुटिका" मुठ्ठी के जकड कर १०१ माला गुरु मंत्र का जाप स्फटिक माला से करे |

गुरु मंत्र: || ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः||

सामाग्री: भ्रांगी गुटिका, स्फटिक माला

जप संख्या: १०१ माला

४) चण्डी महाविद्या को सिद्ध करने हेतु :

सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महाविद्या मंत्र प्रयोग:

विधान: साधक या साधिकाये स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धारण कर , पूर्व दिशा कि ओर बैठे और सामने गुरु चित्र स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे , गुरु मंत्र जप कर साधना आरंभ करें | ग्रहण काल में भ्रांगी, कराली एवं काली गुटिका लाल वस्त्र पर स्थापित कर उनकी पूजन करे | और १०८ बार सहस्राक्षरी महाविद्या मंत्र का उच्चारण करे | प्रयोग के उपरन्त तीनो गुटिका किसी शक्ति पीठ पर चढ़ा दे |

सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महाविद्या मंत्र

ॐ ऐं श्रीं ह्रसौं श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय महा-लक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरा-सुर त्रिभुवन-निदाने, दयांकुरे, सर्व देव-तेजोरूपिणि, विरंच-संस्थिते, विधि-वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु-देहावृते, महा-मोहिनी, मधु-कैटभादि -घोषिणि, नित्य-वरदान-तत्परे, महा - सुधाब्धि-वासिनि, महा-तेजो-धारिणी, सर्वाधारे, सर्व-कारण -कारिणे, अचिन्त्य रूपे, इन्द्रादि - सकल-निर्जर-सेविते, साम-गान-गायनपरिपूर्णोदय कारिणी विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व-सुन्दरि, रक्तांशुके,सूर्य-कोटि-संकाशे, चन्द्र-कोटि-सुशीतले अग्नि-कोटि-दहन-शीले,यम-कोटि-क्रूरे, वायु कोटि-वहन-शीले, ॐकार-नाद-बिन्दु-रूपिणि ,निगमागम -भाग-दायिनी, महिषासुर-दलनि, धूम्र-लोचन-वध-परायणे, चण्ड-मुण्ड-शिरच्छेदिनि, रक्त-बीज-रुधिर-शोषिणि, रक्त-पान-प्रिये, योगिनी-भूत-वेताल भैरवादि-तुष्टि-विधायिनि, शुम्भ-निशुम्भ-शिरच्छेदिनी, निखिलासुर-बल-खादिनि, त्रिदश – राज्यदायिनि, सर्व स्त्री रत्न-

स्वरूपिणि,, दिव्य-देहिनि, निर्गुणे, सगुणे, सदसद-रूप-धारिणी, सुर-वरदे भक्त-त्राण-तत्परे,
बहु-वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे सप्त-कोटि-चामुण्डा-रूपिणि, नवकोटि-कात्यायनी रूपे,
अनेक-लक्षालक्ष-स्वरूपे, इन्द्राणि, ब्रह्माणि ,रुद्राणि, ईशानि, भीमे, भ्रामरि, नारसिंही, त्रि-
शतकोटि-देवते, अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-नायिके, चतुर्विंशति, मुनि-जन-संस्थिते, सर्व-ग्रन्थ-
राज-विराजते, महा-काल-रात्रि , प्रकाश-कला काष्ठादि-रूपिणि, चतुर्दश-भुवन-भाव-
विकारणों, गगन-वाहिनि, गामिनि, ॐकार-हींकार-श्रींकार-जूंकार -औंकार, सौंकार,
हींकार-नाना-बीज-कूट-निर्मित-शरीरे, नाना-मंत्र-राज-विराजिते, सकल-सुन्दरीगण-सेविते,
चरणारविन्दे, महा-त्रिपुर-सुन्दरि कामेश-दयिते, करुणा-रस-कल्लोलिनि, कल्प वृक्षादि-
स्थिते, चिन्ता-मणि -. द्वय – मध्यावस्थिते, मणि - मन्दिरे निवासिनि, चापिनि, खड्गिनि,
चक्रिणि, गदिनी, शङ्खिनि, पद्मिनि, निखिल-भैरवादि-पते, समस्त-योगिनी परिवेष्टिते,
कालि कङ्कालि, तोत्तलोत्तले, ज्वालामुखिं, छिन्न-मस्तके, भुवनेश्वरि, त्रिपुर-लोक-जननि
विष्णु-वक्षस्थल-कारिणे, अजिते, अमिते, अनुपम-चरिते, गर्भ-वासादि--दुःखापहारिणि,
मुक्ति-क्षेत्राधिष्ठायिनि, शिवे, शान्ते, कुमारि, सप्तदशःशताक्षरे, चण्डि चामुण्डे, महा-काली-
महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-त्रि-विग्रहे ! प्रसीद प्रसीद, सर्व-मनोरथान् पूरय-पूरय,सर्वारिष्टान
छेदय छेदय, सर्व-ग्रह-पीडा-ज्वराग्रभय विध्वंसय विध्वंसय , सर्व-त्रिभुवन-जातं वशय-
वशय, मोक्ष-मार्गाणि दर्शय दर्शय, ज्ञान-मार्ग प्रकाशय, अज्ञान-तमो नाशय नाशय , धन
धान्यादि-वृद्धि कुर कुर, सर्व-कल्याणिनि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापदभ्यो निस्तारय
निस्तारय, वज्र-शरीरं साधय साधय ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ।
